प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 8 (2019–20)

हिन्दी – अ (कोड–002)

कक्षा– 10

निर्धारित समय– 3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए।

खण्ड–क (अपठित अंश) 10

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 10

यदि हमसे कोई पूछे– आप कहाँ के निवासी हैं? तो साधारणतया सभी के मुख से अपने नगर, गाँव का, प्रांत का नाम निकलता है। परंतु इस सबसे ऊपर एक हमारी विशाल भूमि भी है, जिसमें ये नगर, गाँव और प्रांत समाये पड़े हैं और जिसमें एक प्रकार की ही शासन–प्रणाली, एक प्रकार की ही जीवन–पद्धति और एक प्रकार के ही आदर्श और संस्कृति दिखाई देते हैं। ऐसी ही भूमि को राष्ट्र कहते हैं और हमारा राष्ट्र है भारत। भारत देश हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक तथा पश्चिमी पाकिस्तान से लेकर बर्मा तक एक विशाल भूखंड है। इसमें अनेक राज्यों के होते हुए भी उन राज्यों को एक सूत्र में बाँधने वाली हमारी संसद और चुनाव पद्धति है। अनेक धर्मों और संप्रदायों के होते हुए भी आध्यात्मिकता तथा धार्मिक भावना के सूत्र से यहाँ के निवासी बँधे हुए हैं।

1. अनेक नगर, गाँव, प्रांत किसमें समाये हुए है? 2

उत्तर : अनेक नगर, गाँव, प्रांत भारत में समाये हुए हैं।

2. राष्ट्र किसे कहा जाता है? 2

उत्तर : वह विशाल भूमि जिसमें गाँव, नगर, प्रांत हैं, एक शासन–प्रणाली है, एक जीवन–पद्धति है और एक ही आदर्श व एक ही संस्कृति दिखाई देती है, उसे राष्ट्र कहा जाता है।

3. उपरोक्त गद्यांश में भारत का विस्तार कहाँ से कहाँ तक बताया गया है? 2

उत्तर : भारत देश हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक तथा पश्चिमी पाकिस्तान से लेकर बर्मा तक एक विशाल भूखंड है।

4. भारत के अनेक राज्यों और निवासियों को कौन एक सूत्र में बाँधे हुए है? 2

उत्तर : भारत के अनेक राज्यों को संसद और चुनाव पद्धति एक सूत्र में बाँधे हुए हैं और यहाँ के निवासियों को आध्यात्मिकता एवं धार्मिक भावना भी एक सूत्र में बाँधे हुए है।

5. साधारणतया सबके मुख से किसका नाम निकलता है? 1

उत्तर : साधारणतया सबके मुख से अपने नगर, गाँव और प्रांत का नाम निकलता है।

6. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर : हमारा राष्ट्र भारत।

खण्ड–ख (व्यावहारिक व्याकरण) 16

2. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. जैसे ही हम घर से निकले, बारिश होने लगी। (वाक्य भेद लिखिए)

उत्तर : मिश्र वाक्य।

2. सोनू ने जब गृहकार्य कर लिया तब खेलने चला गया। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : सोनू गृहकार्य करके खेलने चला गया।

3. पिताजी बैग उठाकर ऑफिस चले गए। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर : पिताजी ने बैग उठाया और ऑफिस चले गए।

4. माँ ने पुत्र को दूध पिलाया और सुला दिया (रचना के आधार पर वाक्य भेद लिखिए)

उत्तर : संयुक्त वाक्य।

3. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. हरि ने पत्र लिखा। (कर्मवाच्य में बदलिए)

उत्तर : हरि द्वारा पत्र लिखा गया।

2. बिल्ली द्वारा चूहा पकड़ा गया। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

उत्तर : बिल्ली ने चूहा पकड़ा।

3. मेरे द्वारा उपन्यास पढ़ा गया। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

उत्तर : मैंने उपन्यास पढ़ा।

4. मैं बाहर नहीं आता। (भाववाच्य में बदलिए)

उत्तर : मुझसे बाहर आया नहीं जाता।

4. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. पिंकी और टिंकी पढ़ती हैं।

उत्तर : व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक, परसर्ग रहित, **पढ़ती हैं**, क्रिया की एक कर्ता।

2. अनुज और उसका भाई खेलते हैं।

उत्तर : पुरूषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, संबंध कारक, **भाई अनुज** से संबंध सूचित करता है।

3. सरला और विमला दोनों स्कूल गई हैं।

उत्तर : समुदायबोधक संख्यावाची विशेषण, सरला और विमला का साथ स्पष्ट करता है।

4. माँ ने अभिमन्यु की वीरता की कहानी सुनाई।

उत्तर : व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, संबंध कारक, **की** परसर्ग सहित **वीरता** से संबंध दर्शाता है।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- $1 \times 4 = 4$

1. श्रृंगार और शांत रसों के स्थायी भाव लिखिए।

उत्तर : श्रृंगार रस का स्थायी भाव **रति** और शांत रस का स्थायी भाव **निर्वेद** है।

2. निम्नलिखित काव्यांश में निहित रस बताइए।

या लकुटी अरू कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।
आठहुँ सिद्धि नवौ निधि के सुख नंद की गाई चराइ बिसारौं।।
रसखान कबौं इन आँखिन सौं, ब्रिज के बन बाग तड़ाग निहारौं।
कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं।।

उत्तर : काव्यांश में भक्ति रस है।

3. मानव मन में जो भाव स्थायी रूप से विद्यमान रहते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?

उत्तर : स्थायी भाव।

4. **रति** किस रस का स्थायी भाव है?

उत्तर : श्रृंगार रस।

5. प्रेमी और प्रेमिका के मिलन अर्थात् संयोग से प्राप्त आनंद को क्या कहा जाता है?

उत्तर : संयोग श्रृंगार।

खण्ड-ग 34

(पाठ्य-पुस्तक एवं पूरक पाठ्य-पुस्तक)

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 6

नमक-मिर्च छिड़क दिए जाने से ताजे खीरे की पनियाती फाँकें देखकर पानी मुँह में जरूर आ रहा था, लेकिन इनकार कर चुके थे। आत्मसम्मान निभाना ही उचित समझा, उत्तर दिया, शुक्रिया, इस वक्त तलब महसूस नहीं हो रही, मेदा भी जरा कमजोर है, किबला शौक फरमाएँ।

नवाब साहब ने सतृष्ण आँखों से नमक-मिर्च के संयोग से चमकती खीरे की फाँकों की ओर देखा। खिड़की के बाहर देखकर दीर्घ निश्वास लिया। खीरे की एक फाँक उठाकर होंठों तक ले गए। फाँक को सूँघा। स्वाद के आनंद में पलकें मूँद गईं। मुँह में भर आए पानी का घूँट गले से उतर गया। नवाब साहब ने फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया। तब नवाब साहब खीरे की फाँकों को नाक के पास ले जाकर, वासना से रसास्वादन कर खिड़की के बाहर फेंकते गए।

1. किसके मुँह में पानी आ रहा था और क्यों? 2

उत्तर : लेखक के मुँह में पानी आ रहा था। ताजे खीरे की रसीली फाँकों में नमक-मिर्च छिड़क दिए जाने के कारण लेखक की उन्हें खा लेने की इच्छा हो रही थी।

2. लेखक ने अपना आत्मसम्मान किस तरह से निभाया? 2

उत्तर : लेखक खीरा खाने से पहले ही इनकार कर चुके थे, इसलिए लजीज खीरे खाने की इच्छा होने के बावजूद उन्होंने आत्मसम्मान की खातिर मना कर दिया। उन्होंने कहा, इस समय इच्छा नहीं हो रही है, पाचन-शक्ति भी कमजोर है, इसलिए आप ही शौक फरमाएँ।

3. नवाब साहब ने खीरे की फाँकों का उपभोग किस तरह से किया? 2

उत्तर : नवाब साहब ने नमक-मिर्च लगी खीरे की फाँकों को पहले ललचाती नजर से देखा, फिर उन्होंने खिड़की से बाहर देखते हुए लम्बी साँस छोड़ी। खीरे की एक-एक फाँक को सूँघा, पलकें मूँदकर उनके स्वाद के आनंद को महसूस किया और उन्हें खिड़की के बाहर फेंकते गए।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए- $2 \times 4 = 8$

1. आपके विचार से पानवाला या कैप्टन में से असली लँगड़ा कौन है?

उत्तर : हमारे विचार से पानवाला ही असली लँगड़ा है, क्योंकि कैप्टन का एक पैर जरूर खराब है परन्तु उसका मन एवं मस्तिष्क देशभक्ति जैसे उच्च भाव से ओतप्रोत है। वह गरीब और विकलांग होने पर भी ईमानदारी और परिश्रम से जीविकोपार्जन करता है। दूसरी ओर पानवाले का शरीर अवश्य स्वस्थ है किन्तु उसकी मानसिकता घटिया है। वह एक देशभक्त का तथा उसकी देशभक्ति का मजाक बनाता है।

2. प्रभाती के लिए बालगोबिन भगत की दिनचर्या में पहला काम क्या था और कैसे पूरा होता था?

उत्तर : प्रभाती के लिए बालगोबिन भगत सवेरे उठते और नदी स्नान के लिए जाते थे। नदी उनके घर से दो मील दूर थी। स्नान करने के बाद वापस लौटते वक्त वे गाँव के बाहर पोखरे के ऊँचे भिंडे पर बैठ जाया करते थे। खँजड़ी बजाकर ऊँची आवाज में प्रभु-भक्ति के गाने गाते थे।

3. फादर की उपस्थिति देवदार की छाया जैसी क्यों लगती थी?

उत्तर : फादर का व्यवहार सभी के साथ सदा मधुर होता था। वे सभी को सहज ही अपना लेते थे। कोई उनकी ममता को भुला नहीं पाता था। उत्सवों और संस्कारों में वे बड़े भाई और पुरोहित की तरह उपस्थित रहकर सभी को अपना आशीष देते थे। क्रोध और आवेश से दूर उनकी आँखों में हर समय वात्सल्य तैरता रहता था। जिस प्रकार देवदार का वृक्ष अपनी घनी छाया से सबको शीतलता प्रदान करता है, उसी प्रकार फादर अपने वात्सल्य और आशीष वचनों से सबको शीतलता प्रदान करते थे।

4. लेखिका मन्नू भण्डारी के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा?

उत्तर : लेखिका का व्यक्तित्व घर और बाहर दोनों से प्रभावित रहा। माँ के व्यक्तित्व में लेखिका का दब्बूपन भरा लगा। उसमें विरोध की चेतना जगी। साथ ही अपनी बात दूसरों के समक्ष रखने की भावना उपजी। लेखिका पिता के जैसी कोमल एवं संवेदनशील थी। लेखिका पर सर्वाधिक प्रभाव उनकी हिंदी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का पड़ा। उन्होंने लेखिका में साहित्य के प्रति रूचि जगाई, समाज को समझना सिखाया। अपने विचारों को सामने रखना और निडर होकर आगे बढ़ना सिखाया।

5. पानवाला कैसा आदमी था? हालदार साहब का प्रश्न सुनकर उसकी प्रतिक्रिया कैसी थी?

उत्तर : पानवाला काला, मोटा और खुशमिजाज आदमी था। हालदार साहब का प्रश्न सुनकर उसकी आँखों में हास्य का भाव उभरा। उसकी तोंद थिरकी, पीछे घूमकर उसने दुकान के नीचे पान थूका फिर उसने लाल-काली बत्तीसी दिखाकर कहा कि यह काम कैप्टन चश्मेवाला करता है।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 6

बादल गरजो!-
घेर-घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
ललित ललित, काले घुँघराले,
बाल कल्पना के-से पाले,
विद्युत छबि उर में, कवि नवजीवन वाले!
वज्र छिपा, नूतन कविता
फिर भर दो-
बादल-गरजो!
विकल विकल, उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाघ के सकल जन,
आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन!
तप्त धरा, जल से फिर
शीतल कर दो-
बादल, गरजो!

1. कवि तथा कविता का नाम बताइए। 2

उत्तर : कवि का नाम **सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला** तथा कविता का नाम **उत्साह** है।

2. कवि बादल को गरजने के लिए क्यों कह रहा है? 2

उत्तर : कवि के अनुसार बादल के गर्जन में क्रांति की चेतना निहित है। इस चेतना से उत्साहित होकर लोग नव-निर्माण करेंगे। इसलिए कवि बादल को गरजने के लिए कह रहा है।

3. कवि बादल को क्या घेरने के लिए कह रहा है? 2

उत्तर : कवि बादल को **घोर गगन** को घेरने के लिए कह रहा है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए- $2 \times 4 = 8$

1. कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?

उत्तर : जिस प्रकार चींटी गुड़ इतना पसंद करती है कि उससे चिपककर अपनी जान भी दे देती है, उसी प्रकार गोपियाँ भी मन, वचन और कर्म से कृष्ण की हो चुकी हैं, भले ही कृष्ण मथुरा में हों, वह उनके पास वापस लौटें या न लौटें, किन्तु गोपियों ने तो हारिल की लकड़ी के समान उन्हें अपने हृदय में दृढ़ता से पकड़ रखा है। अब अगर प्राण भी चले जाएँ तो वे उन्हें अर्थात् श्रीकृष्ण को नहीं छोड़ सकती।

2. लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताईं?

उत्तर : लक्ष्मण ने वीर योद्धाओं की विशेषता इस प्रकार बताई कि वे युद्धभूमि में अपनी वीरता का परिचय साहसपूर्वक लड़कर देते हैं। उनकी वीरता का बखान तो दूसरे लोग करते हैं। वे स्वयं कभी अपनी प्रशंसा नहीं करते। वीर धैर्यवान, क्षोभ रहित, मृदुभाषी, क्षमाशील, विनम्र, शांत, बलवान और बुद्धिमान होते हैं। वे स्वयं कभी घमण्ड नहीं करते और गीदड़ धमकी देकर वीरता का दिखावा नहीं करते।

3. सफलता के चरम शिखर पर पहुँचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खड़ाते हैं तब उसे सहयोगी किस तरह सँभालते हैं?

उत्तर : सफलता के चरम शिखर पर पहुँचने के दौरान कभी-कभी उच्चाकांक्षी व्यक्ति भी लड़खड़ा जाता है। कवि यहाँ यह कहना चाह रहे हैं कि सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ व्यक्ति कभी-कभी दुविधाग्रस्त हो जाता है। उसे सही गलत-निर्णय लेने में असुविधा होने लगती है। ऐसी असमंजसपूर्ण स्थिति में उसके सहयोगी-मित्रगण उसे उचित सलाह देकर संभाल लेते हैं।

4. कविता के आधार पर नागार्जुन के पितृ-हृदय पर प्रकाश डालें

अथवा उनके स्वभाव को समझाएँ।

उत्तर : बहुत दिनों बाद सन्यासी के रूप में बाहर रहकर लौटें नागार्जुन जब पहली बार अपने पुत्र को उसके दूध के निकलते दाँतों के साथ मुस्कुराते देखते हैं, तो वात्सल्य से भरकर वे पुलकित हो उठते हैं। पुत्र को निहारते हुए उनका हृदय बरबस कह उठता है, तुम्हारी भोली-भाली मुस्कान निर्जीव को भी जीवन का वरदान दे सकती है। वह अपने पुत्र की मुस्कान देखकर भाव-विभोर हो उठते हैं। शिशु के प्रति पिता के कर्तव्य और दायित्व का यथोचित पालन न कर पाने का दुख उन्हें विह्वल कर देता है।

5. कवि ने बादल से क्या प्रार्थना की है और क्यों?

उत्तर : कवि ने बादलों से उमड़-घुमड़ कर गरजते हुए बरसने के लिए प्रार्थना की हैं क्योंकि वर्षा न होने से पेड़-पौधे सूख गए हैं। पशु एवं मनुष्य सभी प्यास से व्याकुल हैं। सारा संसार त्राहि-त्राहि कर रहा हैं ऐसी स्थिति में बादल ही प्राणिजगत को जीवन दे सकते हैं।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए- $3 \times 2 = 6$

1. **माता का अँचल** पाठ को पढ़ते हुए आपको अपने माता-पिता द्वारा दिया लाड़-प्यार याद आया होगा। आपके माता-पिता आपके प्रति लाड़-प्यार का प्रदर्शन कैसे करते हैं?

उत्तर : बचपन में मेरी माँ भी दूध न पीने पर साँप आएगा, बिल्ली आ जाएगी ऐसा कहकर दूध पिलाती थी और अपने आँचल से मेरा मुँह साफ करती। जब परीक्षा का समय निकट आता तो भोर की बेला में जगाकर आँख-मुँह धुलातीं और पढ़ने-लिखने की सामग्रियाँ मेज पर क्रम से लगातीं। चेचक निलकने पर घर की सफाई करके नीम की टहनी को मेरे सिर गोद में रखकर बार-बार फेरती। उधर पिता जी खाने-पीने का ध्यान रखते, पके आम तोड़कर खिलाते और साइकिल पर बिठाकर मेला दिखाने ले जाते। आज भी मेरे माता-पिता का प्यार मेरी आँखों में तैर रहा है।

2. नाक मान-सम्मान और प्रतिष्ठा का द्योतक है। यह बात पूरी व्यंग्य रचना में किस तरह उभरकर आई है, लिखिए।

उत्तर : रानी का दर्जी रानी की स्थिति के अनुसार कपड़ों के सिलने में अपनी और अपने देश की नाक ऊँची देखता है। वह रानी के हिन्दुस्तान दौरे के लिए हिन्दुस्तान से रेशमी कपड़ा मँगवाता है। अखबारों में रानी से जुड़े बावरचियों, नौकरों, खानसामों और प्रिंस फिलिप के जीवन से संबंधित छपी बातों से रानी की नाक ऊँची होती है। राजमहल में पलने वाले कुत्तों का फोटो भी उसका सम्मान बढ़ाता है। रानी के पालम हवाई अड्डे पर उतरने से पहले दिल्ली की सड़कों को नया बनाने और इमारतों को सजाने से देश की नाक ऊँची होती है।

3. जितेन नार्गे की भूमिका के बारे में विचार करते हुए लिखिए कि एक कुशल गाइड में क्या गुण होते हैं?

उत्तर : जितेन नार्गे ने सँकरे और धुँध से भरे पहाड़ी क्षेत्र में भी अपने कुशल वाहन चालक होने का परिचय दिया। उसने गैंगटॉक की प्रकृति, रहन-सहन और जनजीवन से लेखिका को करीब से परिचित कराया। नार्गे ने गाइड से बढ़कर एक मित्र की भूमिका निभाई। उसने लेखिका का समय बचाया, उत्साह बढ़ाया और यात्रा को रोचक बनाया। एक कुशल गाइड को साहसी और मिलनसार होना चाहिए। स्थानीय भाषा के साथ अंग्रेजी और राष्ट्रभाषा का ज्ञान होना चाहिए। पर्यटक स्थल के रहन-सहन, भौगोलिकता और प्रकृति का अच्छा ज्ञान रखना चाहिए। पर्यटकों की रूचियों और विचारों को समझना चाहिए।

खण्ड-घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए- 10

(1) सूचना प्रौद्योगिकी का समाज पर प्रभाव

संकेत बिंदु : सूचना प्रौद्योगिकी का अर्थ ✲ समाज पर प्रभाव ✲ इसके लाभ ✲ सूचना ढाबा ✲ उपसंहार

(2) पेड़-पौधे और हम

संकेत : भूमिका ✲ प्रकृति द्वारा मानव का पालन-पोषण ✲ वृक्षों के लाभ ✲ उपसंहार।

(3) उपभोक्तावाद का जीवन पर प्रभाव

संकेत : भूमिका ✲ उपभोक्तवादी संस्कृति का दुष्प्रभाव ✲ नैतिक मूल्यों का ह्रास ✲ उपसंहार

उत्तर :

(1) सूचना प्रौद्योगिकी का समाज पर प्रभाव

संकेत बिंदु : सूचना प्रौद्योगिकी का अर्थ ✲ समाज पर प्रभाव ✲ इसके लाभ ✲ सूचना ढाबा ✲ उपसंहार

सूचना प्रौद्योगिकी का अर्थ- सूचना प्रौद्योगिकी को एक ऐसी प्रौद्योगिकी के रूप में परिभाषित किया गया है जो दुनिया में किसी भी व्यक्ति के साथ कहीं भी होने वाली घटना या प्रसंग के बारे में संपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराती है। सूचना को समाज के विकास का मूल स्रोत कहा जा सकता है।

समाज पर प्रभाव- सूचना प्रौद्योगिकी की बदौलत निकट अतीत में कुछ ऐसे अभूतपूर्व व्यापक लेकिन कल्पनातीत तकनीकी विकास हुए जिन्होंने दुनिया में रह रहे तमाम लोगों को एक ही नेटवर्क से जोड़ना संभव कर दिया। आज के समाज को सूचना समाज कहा जाता है। सूचना महामार्ग के जरिये आम नागरिकों को एक-दूसरे से जोड़ने का काम होता है। इन महामार्गों पर सूचना और आँकड़ों के प्रवाह ने घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए समाज की रचना की है।

इसके लाभ- समाज का हर नागरिक विश्व सूचना तक पहुँच सकता है। वह असंख्य स्रोतों में से किसी से भी ज्ञान हासिल कर सकता है। एक आम व्यक्ति इंटरनेट और ई-मेल के

जरिये किसी भी क्षेत्र के विशेषज्ञ तथा डॉक्टर से सम्पर्क कर सकता है और श्रेष्ठ चिकित्सकीय परामर्श हासिल कर सकता है। मरीज के वीडियो चित्र, ईसीजी व अन्य चिकित्सकीय रिपोर्ट आदि भी जाँच के लिए डॉक्टर को इसी माध्यम से भेजी जा सकती है। यही बात विशेष शिक्षकों के मामले में भी लागू होती है। आज दुनिया के किसी भी कोने में रह रहे लोगों को बुद्धिमान व्यक्तियों का परामर्श उपलब्ध है।

सूचना ढाबा– नए सूचना समाज ने सूचना ढाबों को जन्म दिया है जो कोने–कोने में कार्यरत है। नागरिक अब इन ढाबों के जरिए करों का भुगतान या सरकारी दस्तावेज प्राप्त कर सकते हैं। जो शहरी नागरिक अपने निजी इंटरनेट कनेक्शन का निर्वाह नहीं कर सकते, वे भी ई–मेल सेवा, वीडियो फोन और ई–कॉमर्स के जरिये इसका फायदा उठा सकते हैं। किसी भारतीय गाँव में रहने वाली उस 80 साल की वृद्धा की खुशी की कल्पना कीजिए जो अपने घर के पास बने सूचना ढाबे पर जाकर हजारों मील दूर बैठे अपने पोते से संपर्क कर सकती है।

उपसंहार– आज विश्व ग्राम की छः अरब से अधिक जनसंख्या की सूचना सहक्रिया, ज्ञान और बुद्धि के जरिये समाज का सर्वांगीण विकास हो रहा है। वसुधैव कुटुंबकम् का आदर्श साकार होने वाला है।

(2) पेड़–पौधे और हम

संकेत : भूमिका ✻ प्रकृति द्वारा मानव का पालन–पोषण ✻ वृक्षों के लाभ ✻ उपसंहार।

भूमिका– पेड़–पौधे और हम यानी कि मानव एक ही प्रकृति के दो विविध रूप हैं। दोनों ही जीवित हैं, दोनों ही चेतन हैं। विकास की दृष्टि से प्रकृति ने मानव के कुछ अंगों को परिष्कृत करके कुछ अधिक संतुलन, कुछ अधिक क्रियाशीलता दे दी है, तो वहीं पेड़–पौधों में कुछ विशेष गुणों का समायोजन करके उन्हें अधिक उपयोगी बना दिया है। हम चल फिर सकते हैं, बोल सकते हैं, साँस लेने, देखने, सुनने, सूँघने और रस ग्रहण करने की प्रक्रियाएँ भी प्रत्यक्ष रूप से कर सकते हैं किन्तु इन सभी क्रियाओं को पेड़–पौधे भी अप्रत्यक्ष और सूक्ष्म रूप में करते हैं। यानी कि पेड़–पौधे और मानव दोनों ही चेतन प्रकृति के अंग हैं।

प्रकृति द्वारा मानव का पालन–पोषण– मानव का विकास प्रकृति से हुआ है। इसलिए अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए हम पेड़–पौधों और प्रकृति पर निर्भर हैं। प्रकृति हमें भोजन के लिए अन्न, दालें, फल, फूल आदि प्रदान कर हमारा पालन–पोषण करती है। इतना ही नहीं, पेड़–पौधों द्वारा दी गई हवा से हम साँस लेते हैं। यह तथ्य सभी जानते हैं कि पेड़–पौधे हवा में अपनी श्वास द्वारा ऑक्सीजन गैस छोड़ते हैं। यही ऑक्सीजन हमारे जीवन का आधार है। इसके बिना कोई भी प्राणी कुछ मिनटों से अधिक जीवित नहीं रह सकता है। इतना ही नहीं, पेड़–पौधे हमारे द्वारा छोड़ी गई साँस में से घातक गैस कार्बन–डाई–ऑक्साइड को सोख लेते हैं, जिससे प्रकृति में वायु का प्रदूषण दूर हो जाता है। यदि पेड़–पौधे ऐसा न करें तो कार्बन–डाई–ऑक्साइड गैस से हमारा दम घुटने लगे। इस प्रकार पेड़–पौधे हमें जीवन भी देते हैं और हमारा पालन–पोषण भी करते हैं।

वृक्षों के लाभ– जीवन के लिए उपयोगी लकड़ी, कोयला गैस आदि सबके स्रोत भी पेड़–पौधे ही हैं। पेड़ों की लकड़ी से हम घर बनाते हैं, आग जलाते हैं और अन्य प्रकार से इन्हें उपयोग में लाते हैं।

उपसंहार– इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पेड़–पौधे हमारे लिए जीवनदायी हैं। अतः हमारा कर्तव्य है कि अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए हम पेड़–पौधों की रक्षा करें और नए पेड़ लगाएँ।

(3) उपभोक्तावाद का जीवन पर प्रभाव

संकेत : भूमिका ✻ उपभोक्तवादी संस्कृति का दुष्प्रभाव ✻ नैतिक मूल्यों का ह्रास ✻ उपसंहार

भूमिका– आज वैज्ञानिक उन्नति की बदौलत हमारी जीवन–शैली में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं। नित्य नई वस्तुएँ अधिकाधिक मात्रा में हमारे सामने आ रहीं हैं। बाजार में भोग–विलास की विभिन्न सामग्री की बहुलता है जिन्हें विज्ञापन और अधिक मोहक बनाए जा रहे हैं। आज जन–समुदाय उन्हीं चीजों को अपनाने के लिए भरपूर प्रयास करता है जिन्हें विज्ञापन का स्पर्श मिला है।

उपभोक्तवादी संस्कृति का दुष्प्रभाव– चाहे खाद्य सामग्री हो या दैनिक उपयोग की वस्तुएँ हों, चाहे कपड़े हों या प्रसाधन सामग्री, चाहे कुछ भी हो, सबके साथ फिल्मी सितारों की मनमोहक अदाएँ जोड़कर विज्ञापन हमारा ध्यान खींच रहा है। बड़े तो बड़े, छोटे–छोटे बच्चे भी आज खाने–पीने, पहनने–ओढ़ने के मामले में फिल्मी सितारों का अंधा अनुकरण कर रहे हैं। इस प्रकार हम सब अपनी आवश्यकताओं के दायरे को खींच–खींचकर बढ़ाते जा रहे हैं, मानो उनके बिना हम जी नहीं सकते। महँगी से महँगी वस्तुओं को दिखाने के लिए खरीदते जा रहे हैं और अपने धन का दुरूपयोग कर रहे हैं। आजकल लोग आवश्यकता के लिए नहीं बल्कि दिखावे के लिए कपड़े, जूते, खिलौने, मोबाइल फोन, म्यूजिक सिस्टम, कम्प्यूटर, मोटर साइकिल, कार तथा प्रसाधन सामग्री खरीदते हैं।

नैतिक मूल्यों का ह्रास– आजकल जगह–जगह जिम, ब्यूटी पार्लर, डिजाइनर वस्त्रों के लिए बुटीक एवं मॉल्स खुल गए हैं। पाँच सितारा स्कूल और अस्पताल खुल गए हैं। इस प्रकार उपभोक्तावादी संस्कृति को अपनाकर हम अपने को व्यक्तिकेन्द्रित बनाते जा रहे हैं। जो लोग हमारी तरह खर्च नहीं कर सकते, उनसे हम दूरी बरत रहे हैं, साथ ही वे भी हमारे साथ संबंध बनाए रखकर अपने को हीन दर्शाना नहीं चाहते। इस तरह हमारे सामाजिक संबंध बिगड़ रहे हैं। अतः उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण हमारी नैतिकता और मर्यादा का अवमूल्यन हो रहा है।

उपसंहार– आपस में दूरियाँ बढ़ने के साथ ही आक्रोश, अशांति, ईर्ष्या तथा प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। हमारे सादा जीवन

और उच्च विचार की अवधारणा आज पूरी तरह से लुप्त हो गई है और हमारा जीवन जटिलताओं से भर गया है।

12. आर्थिक सहायता हेतु अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को एक पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखिए। 5

उत्तर :

सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदय,
राजकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय,
रामनगर, झालावाड़।

विषय : आर्थिक सहायता प्राप्ति हेतु आवेदन–पत्र।

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की दसवीं कक्षा की छात्रा हूँ। विगत दिनों मेरे पूज्य पिताजी का स्वर्गवास हो जाने से घर की आर्थिक स्थिति बहुत बिगड़ गई है। मेरी माता जी सारा दिन कड़ी मेहनत करके परिवार के सात सदस्यों की किसी प्रकार उदर पूर्ति कर रही हैं। वस्त्र तथा अन्य वस्तुओं के लिए भी बहुत कठिनाई उठानी पड़ती है। ऐसी स्थिति में मेरी माता जी के लिए मेरी पढ़ाई का व्यय भार उठाना नितांत असंभव है जबकि मेरे मन में पढ़ने की तीव्र अभिलाषा है। मैं अब तक सभी कक्षाओं में सदैव अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होती रही हूँ। सभी गुरूजन तथा सहपाठी मेरे आचरण से प्रसन्न हैं। मैं खेलों तथा वाद–विवाद प्रतियोगिताओं में भी सक्रिय रूप से भाग लेती हूँ। अतः आपसे करबद्ध प्रार्थना करती हूँ कि आप मुझे विद्यालय की ओर से आर्थिक सहायता दिलाएँ, जिससे मेरी पढ़ाई अविच्छिन्न रूप से चल सके।

आशा है कि आप मेरी आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर मेरी प्रार्थना को अवश्य ही स्वीकार करेंगे। इस उपकार के लिए मैं आजीवन आपकी आभारी रहूँगी।

धन्यवाद सहित,
आपकी आज्ञाकारिणी शिष्या
कल्पना
कक्षा– दसवी अ
अनुक्रमांक –0235
दिनांक : 05 अप्रैल, 2018

अथवा

आपका मित्र किसी दुर्घटना में घायल हो गया और उसे अस्पताल में दाखिल होना पड़ा। कुशलक्षेम पूछते हुए उसे एक पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखिए।

उत्तर :

न्यू मार्केट,
नई दिल्ली।
27 सितम्बर, 2018
प्रिय मित्र करन,
सप्रेम मधुर स्मरण

मित्र मुझे कल मयंक का पत्र प्राप्त हुआ। उससे ज्ञात हुआ कि चंडीगढ़ जाते हुए तुम्हारी बस दुर्घटनाग्रस्त हो गई। मुझे बहुत दुख हुआ कि तुम गंभीर रूप से घायल हो गए हो और अस्पताल में दाखिल हो। ईश्वर की असीम कृपा रही कि उचित समय पर तुम्हें वहाँ के लोगों ने अस्पताल में दाखिल करवा दिया और तुम्हें समय पर उचित उपचार मिल गया।

मित्र तुम घबराना नहीं। हम सब तुम्हारे साथ हैं। जीवन में सुख–दुख तो आते रहते हैं, इससे हमें घबराना नहीं चाहिए। ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि तुम शीघ्र स्वस्थ हो जाओ। मेरी परीक्षाएँ चल रही हैं। उनके समाप्त होते ही मैं तुमसे मिलने अवश्य आऊँगा। तुम्हें किसी भी प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो तो निःसंकोच मुझे बताना। मैं किसी भी रूप में तुम्हारे काम आ सका तो स्वयं को भाग्यशाली समझूँगा। शेष कुशल है।

तुम्हारा अभिन्न मित्र
अखिल

13. जुकाम व बुखार में काम आने वाले आयुर्वेदिक उत्पाद का आकर्षक विज्ञापन 25–50 शब्दों में लिखिए। 5

उत्तर :

रतनजोत
जुकाम को दूर भगाए
रखे आपके तन–मन को चंगा
आपके घर के लिए खास।
बच्चे–बूढ़े–बड़े सभी को आए रास।।
सभी प्रमुख मेडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध

अथवा

ज्वैलरी ऑफर पर 25–50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर :

दीपावली का उपहार
मोती सन्स ज्वैलर्स
लाए हैं आपके लिए
मेकिंग चार्ज़िस की छूट, क्वालिटी में नहीं कोई चूक।
आप भी आएँ, सेवा का लाभ उठाएँ।
● शुद्धता की गारंटी ● हॉलमॉर्क जाँच ● 18 से 24 कैरट तक अनेक डिज़ाइन
● भरपूर वैराइटी
10 हज़ार की खरीद पर चाँदी का एक सिक्का मुफ़्त

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online